श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीमोदद्रुम - द्वीप

वर्तमान में इस स्थान को माउगाछि या मामगाछि कहते हैं। मोदद्रुम- द्वीप नवधा भक्ति में से एक 'दास्य- भक्ति' का क्षेत्र है। यह वृन्दावन के द्वादश वनों में से 'भाण्डीर' वन है। इस स्थान के दर्शन से भक्तों के हृदय में सेवामोद अर्थात् सेवा के आनन्द की वृद्धि होती है। इसलिये इसका नाम 'मोदद्रुम- द्वीप' पड़ा। भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने अपने वनवास काल

में यहाँ एक विशाल वटवृक्ष के नीचे कुटिया बनाकर वास किया था।

यहाँ श्रीराम उपासक एक विप्र वास करते थे। श्रीमहाप्रभु के आविर्भाव के दिन वे श्रीजगन्नाथ मिश्र के भवन में भी उपस्थित हुए थे। विप्र, शिशु के अलौकिक रूप के दर्शन से मुग्ध होकर उनके प्रभु श्रीरामचन्द्र ही नवदुर्वादलश्यामद्युति को ढक करके श्रीजगन्नाथ मिश्र के पुत्र रूप से अवतीर्ण हुए हैं, यह अनुभव के करते थे। विप्र, श्रीजगन्नाथ मिश्र के पुत्र का बार- बार दर्शन करके उनके प्रभु का गुप्त भाव से अर्थात् श्रीगौरांग रूप से अवतीर्ण होने का क्या कारण है, उसे

निर्णय न कर सकने पर विशेष चिन्तित हो गये। बाद में मामगाछि में वापस आने पर रात को सोते समय श्रीरामचन्द्र की मूर्ति ध्यान करते-करते निद्रित होने पर विप्र ने स्वप्न में अपने इष्टदेव को श्रीगौरमूर्ति में दर्शन किये तथा फिर उसी मूर्ति को नवदुर्वादलश्याम रूप में दर्शन करके आश्चर्यचकित रह गये। विप्र ने श्रीगौरचरणों में प्रणत होकर इस गूढ़ रहस्य को जानने के लिये प्रार्थना की तो श्रीगौरसुन्दरजी ने अपने भक्त के निकट अपना तत्त्व समझाया एवं इस रहस्य को किसी दूसरे के निकट प्रकाश करने का निषेध करके अन्तर्हित हो गये।

इस स्थान का माहात्म्य 'श्रीभक्तिरत्नाकर' नामक ग्रन्थ के बारहवें तरंग में इस प्रकार वर्णित है

"माउगाछि प्रदेशेर शोभा निरखिया।
श्रीनिवास प्रति कहे ईषत् हासिया ।।

एइ माउगाछि ग्राम लोकेते प्रचार।
'मोदद्रुम- द्वीप' नाम पूर्वे से इहार ।।

मोददुम- द्वीप नाम यैछे व्यक्त हैल।
ताहा कहि, प्राचीनेर मुखे ये शुनिल ।।

पालिते पितार सत्य कौशल्या- तनय ।
अयोध्या छाड़िया वने करिला विजय।।

छाड़ि' राजवेश, प्रभु महानन्द मने ।
जानकी- लक्ष्मणसह भ्रमे वने वने ।।

अति सुकोमल पदे ये पथे चलये।
से पथ कोमल हय, किछु ना बाजये ।।

वात वर्षा सूर्यातप सदा अनुकूल ।
अद्भुत भ्रमण लीला भुवने अतुल ।।

नाना देशवासी स्त्री पुरुषादि यत ।
दखि' रामचन्द्र शोभा सबेइ उन्मत्त ।।

ये ये वन पर्वतादि स्थाने कैला
स्थिति।
हैल महातीर्थ से से स्थाने व्यक्त
कीर्ति।।

* * * * *

अग्रे राम, राजा दशरथेर नन्दन ।
मध्ये श्रीजानकी, पाछे ठाकुर
लक्ष्मण।।

श्रीराम जानकी लक्ष्मणेर शोभा देखि'।
आनेर का कथा, महामुग्ध पशुपारखी।।

ब्रह्मादिर वन्द्य, राम राजीवलोचन ।
चतुर्दिके चाहि' चले गजेन्द्र गमन ।।

कथोदूर हैते नवद्वीप पाने चाय।
मन्द मन्द हासे अति कौतुक हियाय ।।

श्रीरामचन्द्रेर देखि' सहास्य वदन ।|
जिज्ञासे जानकी कह हास्येर कारण ।।

शुनि' श्रीसीतार प्रोढ़ - वाक्य रसावेशे।
कहये जानकी प्रति सुमधुर भाषे ।।

द्वापरेर परे कलियुगेर प्रथमे ।
हबे महा कौतुक ए नवद्वीप ग्रामे ।।

नवद्वीपे करि' अति अद्भुत विहार ।
तदुपरि करिब संन्यास अंगीकार ।।

एबे यैछे भमि' ऐछे करिब भ्रमण ।
करिते भ्रमण मने हासिलु एखन ।।

शुनिया जानकी निवेदये जोड़- करे।
कैछे बिलसिवा, प्रभु नदीया नगरे ।।

शुनि' प्रभु कहे, विप्रवंशेते जन्मिव ।
बाल्यकाले विविध चान्चल्य
प्रकाशिब।।

धरिब अद्भुत पीतवर्ण निरुपम ।
आमा पाने चाहिया मातिब त्रिभुवन ।।

हब विद्यावन्त कीर्ति व्यापिव भूवने ।
करिब विवाहद्वय पिता अदर्शने ।।

एबे यैछे कैलु, पिण्ड प्रदान गयाते ।
ऐछे पिण्ड प्रदान करिब लोकरीते ।।

नवद्वीपे भक्तेर उल्लास बाढ़ाइब ।
बह्मादि दुर्लभ संकीर्तन प्रचारिब ।।

निजगणे विविध प्रकारे प्रबोधिया।
हईबांग देशान्तरी संन्यासी हइया ।।

शुनि' श्रीजानकी कहे सहास्य वदने ।
संन्यास करिबा तबे विवाह वा केने ?

इथे अनुचित एइ मोर मने लय ।
परम दयालु हैया हइबा निर्दय ।।

शुनि' लज्जायुक्त राम कहे सीता प्रति।
ना जानह सदा मोर नवद्वीपे स्थिति ।।

कहिते कहिते ऐछे मधुर गमने ।
जानकी लक्ष्मणसह आइला एइखाने।।

एक वृहद्वटदुम आछिल एथाय ।
तार तले दाँड़ाइला अपूर्व छायाय ।।

पुनः श्रीजानकी कहे निज प्राणनाथे ।
संकीर्तनानन्द प्रभु कैछे नदीयाते ।।

जानकी- बल्लभ राम राजीवलोचन।
प्रियाप्रति कहे करो मुद्रित नयन ।।

शुनिया जानकी दुई नयन मुदये ।
नवद्वीपे अद्भुत विलास निरिखये ।।

गीत -नृत्य वाद्येर अवधि नदीयाय ।

प्रभु - भक्त असंख्य उपमा नाइ ताय ।।

परिकर मध्ये गौरविग्रह सुन्दर ।
कैशोर वयस महारसेर सागर ।।

भुवन मोहये से - ना अंगभंगिमाते ।
से शोभा देखिया सीता नारे स्थिर
हैते।।

नयन मेलिया चाहे प्राणनाथ पाने ।
हासिया श्रीरामचन्द्र स्थिर कैल ताने।।

सर्व- तत्त्व जानेन श्रीसुमित्रानन्दन ।
हइला अधैर्य, लीला करिया स्मरण ।।

एथा सकलेर मोद वृद्धि अतिशय ।
एइ हेतु मोददुम- द्वीप पूर्वे कय" ।।

माउगाछि प्रदेश की शोभा देखकर मुस्कराते हुए श्रीईशान ने श्रीनिवास के प्रति कहा लोगों में यह स्थान माउगाछि नाम से प्रचारित है।

पहले इस का नाम 'मोदद्रुम- द्वीप' था। इस स्थान का नाम मोदद्रुम-द्वीप कैसे हुआ, इस विषय में बूढ़े बुजुर्गों से जो मैंने सुना, उसे तुम्हें बताता हूँ दशरथ के वचन को पालन करने के लिए श्रीरामचन्द्र जी अयोध्या छोड़कर वनवास में गये थे। राजवेश को छोड़कर प्रभु श्रीराम, जानकी जी व लक्ष्मणजी के साथ, वन-वन में भ्रमण करते थे। अति सुकोमल श्रीचरणों से वे जिस पथ पर चलते थे, वह पथ कोमल हो जाता था। यहाँ तक कि श्रीचरणों में ठंडी या गर्म हवा, वर्षा व सूर्यताप भी नहीं लगता था। श्रीरामचन्द्र की भ्रमणलीला, अति अद्भुत थी, जिसकी संसारिक वस्तुओं

से तुलना नहीं हो सकती। विभिन्न देश के स्त्री पुरुषादि श्रीरामचन्द्र की शोभा देखकर भगवान के प्रेम में पागल हो जाते थे। जिस-जिस वन में या पर्वतादि स्थान में श्रीरामचन्द्रजी ने वास किया था, वे सभी स्थान महातीर्थ बन गये। "

आगे- आगे राजा दशरथ - नन्दन श्रीराम, बीच में जानकी एवं पीछे लक्ष्मण जी थे। श्रीराम जानकी-लक्ष्मण की शोभा देखकर औरों की क्या बात, जंगल के पशु-पक्षी भी मुग्ध हो जाते थे। ब्रह्मादि के वन्दनीय, कमललोचन श्रीरामचन्द्रजी वन में चारों तरफ देखते हुए हाथी की चाल

के समान चल रहे थे। कुछ दूरी से इस नवद्वीप को कुतूहल - हृदय से देखते हुए वे मन्द मन्द मुस्कराने लगे। श्रीरामचन्दजी का सुन्दर मुस्कराता हुआ चेहरा देखकर जानकी जी पूछती हैं, हे प्रभो! अचानक आपके मुस्कराने का क्या कारण है ?

श्रीसीताजी की बात सुनकर रसावेश में जानकीजी के प्रति श्रीरामचन्द्रजी सुमधुर भाव से बोले — द्वापर के बाद कलियुग के प्रारम्भ में, इस नवद्वीपधाम में महान कुतूहल होगा क्योंकि मैं नवद्वीप में अद्भुत विहार करूँगा। यही नहीं, उसके बाद मैं संन्यास ग्रहण करूँगा। अभी जिस

प्रकार में भ्रमण कर रहा हूँ, तब भी ऐसे ही भ्रमण करूँगा, इसीलिये वह सब स्मरण हो जाने से मन ही मन मैं हंस पड़ा। श्रीरामचन्द्र जी से सारी बात सुनकर जानकीजी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया — प्रभो ! क्या आप बतायेंगे कि किस प्रकार नदीयानगर में विलास करेंगे ?

सीताजी की बात सुनकर, प्रभु श्रीराम कहने लगे कि मैं, विप्रवंश में जन्म ग्रहण करूँगा तथा बाल्यकाल में बहुत प्रकार की चंचलता करूँगा। अद्भुत अतुलनीय पीले रंग के वस्त्र धारण करूँगा। मुझ को देखकर सारा त्रिभुवन मत्त हो जायेगा। इस लीला में

बहुत बड़ा विद्वान बनूँगा, मेरी कीर्ति चारों ओर फैलेगी। पिता के परलोकगमन के बाद दो विवाह करूँगा। अभी मैंने जिस प्रकार गया में पिता के उद्देश्य से पिण्ड दिया, उसी प्रकार की लोक रीति से तब भी मैं पिता के उद्देश्य से पिण्ड दूँगा। अपनी उस लीला में नवद्वीपवासी भक्तों के उल्लास को बढ़ाऊँगा एवं ब्रह्मादि के भी दुर्लभ संकीर्तन का प्रचार करूँगा। अपने पार्षदों को विविध प्रकार से समझाकर मैं संन्यास ग्रहण करके नवद्वीप छोड़कर चला जाऊँगा।

सारी बात सुनने के बाद जानकी ने हंसते हुए कहा — जब आप

संन्यास ही लोगे, तब विवाह करने की क्या ज़रूरत है ? न जाने क्यों मुझे ये अनुचित - सा लगता है। परम दयालु होकर, फिर निर्दय क्यों बनोगे आप?

जानकीजी की बात सुनकर श्रीराम जी का सिर शर्म से लाल हो गया तथा वे सिर झुकाकर मुस्कराते हुए बोले — अरे! ये तो मेरी लीला है। मैं तो हमेशा नवद्वीप में ही रहता हूँ। नवद्वीप की व संन्यास की चर्चा करते-करते श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मण जी व सीता जी नवद्वीप में पहुँच गये और एक बड़े से वट वक्ष के नीचे आकर खड़े हो गये।

वट वृक्ष के नीचे खड़े होकर सीता जी ने पुन: राम जी से पूछा — प्रभो ! नदीया में संकीर्तन का आनन्द किस प्रकार का होगा तो श्री जानकीबल्लभ, कमलनयन श्रीराम जी ने जानकी से कहा — तुम अपनी आंखें बंद करो, सब समझा देता हूँ। श्रीराम जी की बात सुनकर सीता जी ने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं और श्रीरामजी की कृपा से नवद्वीप का अद्भुत संकीर्तन विलास देखने लगीं। उस समय गीत-नृत्य - वाद्य का नदीया में चरम प्रकाश था। असंख्य प्रभु - भक्त थे, जिनकी उपमा नहीं दी जा सकती। परिकर के मध्य में अति सुन्दर गौरविग्रह, किशोर अवस्था व

संकीर्तन महारस के सागर विराजमान थे। उनकी अंग- भंगी से त्रिभुवन मोहित हो रहा था। वह शोभा देखकर सीता जी स्थिर नहीं रह सकीं व नेत्र खोल कर प्राणनाथ श्रीराम की तरफ देखने लगीं। तब श्रीरामचन्द्रजी ने हंसते हुए सीताजी को स्थिर किया। यद्यपि सुमित्रानन्दन श्रीलक्ष्मण, सब तत्त्व को जानते थे। तब भी श्रीराम जी की संन्यास लीला को स्मरण करके वे भी अधीर हो गये। यहाँ पर आकर श्रीराम, श्रीलक्ष्मण व सीता जी इत्यादि सभी का हर्ष अतिशय वृद्धि को प्राप्त हुआ था इस लिए पहले, इसे मोदद्रुमद्वीप कहते थे। '

(क) **श्रीवृन्दावनदास ठाकुर का श्रीपाट** — यह ग्राम ही मामगाछि है। श्रीवास पंडित जी की पत्नी श्रीमालिनीदेवी का पित्रालय एवं श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासावतार व श्रीचैतन्यलीला के व्यास, श्रीवृन्दावनदास ठाकुर की आविर्भाव और लीला भूमि – मामगाछि ही है। श्रील वृन्दावनदास जी के जन्मस्थान को कोई नहीं जानता था क्योंकि यह स्थान लुप्त हो गया था। किन्तु श्रीगौर और गौरनिजजन के चरणचिह द्वारा पवित्र स्थानों व लुप्त तीर्थसमूह को पुन: प्रकाश करने वाले ॐ विष्णुपाद परमहंस 108 श्री श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर के

प्रयत्न से श्रीवृन्दावनदासजी के जन्मस्थान की सेवा पुनः प्रकाशित हुई। यह स्थान श्रीगौड़मण्डल का नैमिषारण्य है। यहाँ श्रीवृन्दावनदास ठाकुर के सेवित विग्रह श्रीगौर - नित्यानन्द जी विराजमान हैं।

(ख) **श्रीराधोगोपीनाथ विग्रह** — इस मामगाछि ग्राम में ही श्रीगोरपार्षद श्रीसारंग ठाकुर के प्रतिष्ठित विग्रह - श्रीराधा - गोपीनाथजी विराजमान हैं। श्रीसारंग ठाकुर, मोदद्रुमद्वीप में गंगा के किनारे एक निर्जन स्थान में रहकर भजन करते थे। भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के द्वारा बार-बार शिष्य बनाने के

लिए प्रेरित करने पर श्रीसारंग ठाकुर जी ने संकल्प लिया कि अगले दिन सर्वप्रथम जिसको देखेंगे, उसे ही शिष्य बना लेंगे। घटनाक्रम से अगले दिन प्रातः काल भागीरथी में स्नान के समय एक मृतदेह उनके चरणों से टकराई। श्रीसारंग ठाकुर जी ने उसी मृत शरीर को पुनर्जीवन प्रदान करके उसे ही शिष्य बना लिया। वही शिष्य मुरारि के नाम से प्रसिद्ध हुआ। परन्तु श्रीसारंग नाम के साथ 'मुरारि' की कथा जुड़ी रहने से भक्तों में उनकी 'श्रीसारंग मुरारि' नाम से प्रसिद्धि हुई। कुछ वर्ष हुए श्रीवृन्दावन दास ठाकुर के श्रीपाट के थोड़ा दक्षिण में, एक प्राचीन वकुलवृक्ष के सामने श्रीठाकुर

सारंग मुरारि का एक मन्दिर निर्मित हुआ है, जहाँ श्रीराधागोपीनाथ जी के विग्रह पूजित होते हैं।

(ग) **श्रीमदनगोपाल विग्रह** — श्रीवृन्दावन दास ठाकुर के श्रीपाट के थोड़ी दूरी पर चट्टग्राम निवासी श्रीमुकुन्द दत्त ठाकुर के भाई, अशेष परदुःखदुःखी अर्थात् सभी के दुःखों को अपना दुःख समझने वाले श्रीगौरपार्षद श्रीवासुदेव दत्त ठाकुर वास करते थे। उनका प्रतिष्ठित और पूजित, श्रीमदनगोपाल जी का विग्रह वर्तमान में श्रीसारंग मुरारि जी के प्रतिष्ठित श्रीराधागोपीनाथ जी विग्रह

के श्रीमन्दिर में विराजमान् होकर पूजित हो रहा है।

(घ) **श्रीवैकुण्ठपुर व श्रीनारायणपीठ** — इस वैकुण्ठपुर का प्राचीन इतिहास, इस प्रकार है:

एक दिन देवर्षि नारद श्रीमन् नारायण भगवान के दर्शन के लिये वैकुण्ठ में गये थे। वहाँ उन्होंने देखा कि श्रीवैकुण्ठनाथ भगवान श्रीहरि भारतवर्ष में परम रमणीय नवद्वीपनगर में अवतीर्ण होंगे, इस प्रसंग को लेकर वे अपने पार्षदों के साथ मजाक कर रहे थे। नारदजी, उस आनन्द कोलाहल को देखकर वैकुण्ठ से

वापसी के साथ, वैष्णवश्रेष्ठ श्रीमहादेव के निकट कैलाश पर्वत पर आये। बड़े आनन्द में नाचते नारद जी को आता देख श्रीमहादेवजी ने नारद जी को आलिंगन किया एवं किस स्थान से आगमन हो रहा है, पूछा। नारद जी ने श्रीमहादेवजी से वैकुण्ठ की सारी बात कही। श्रीशिव जी महाराज श्रीनारदजी के मुख से सब कथा सुनकर, भगवत् प्रेमानन्द में हुंकार करने लगे। नारद जी, श्रीशिव को नवद्वीप- लीला में इस प्रकार से विभोर देखकर, स्वयं ही नवद्वीप के लिये चल पड़े। कुछ ही क्षणों में व मन की गति से चलते हुए श्रीनवद्वीप धाम में पहुँचे। इस स्थान पर आकर, नवद्वीप की शोभा दर्शन

करते-करते, यहाँ भी श्रीवैकुण्ठनाथ के दर्शनों की आकांक्षा से मन ही मन श्रीनारायण का ध्यान करने लगे। श्रीमन् नारायण जी ने कृपापूर्वक उन्हें दर्शन दिया । श्रीनारद जी भगवान नारायण को अपने सम्मुख विराजमान देखकर प्रेम में विह्वल होकर, वीणा में मधुर तान से, श्रीनवद्वीपधाम के साथ श्रीमन् नारायण जी का स्तव करने लगे। नारद जी स्तव के मध्य ही भगवान नवद्वीपचन्द्र के दर्शन करके प्रेम में अधीर हो गये तो श्रीगौरसुन्दर जी ने नारद जी को सुमधुर वचन से कहा कि वे अल्पदिन में ही इस स्थान पर अवतीर्ण होकर, विविध वेदगुह्य लीला विस्तार करेंगे। इस प्रकार के

वाक्यों से नारद जी को संतुष्ट करके श्रीमन् गौरनारायण भगवान अन्तर्हित हो गये। इस स्थान पर वैकुण्ठ का ऐश्वर्य प्रकाशित हुआ था, इसीलिये इसे 'वैकुण्ठपुर' कहते हैं। इसी स्थान पर नारद जी ने श्रीनारायण भगवान के दर्शन किये थे। विद्वान लोग इसे "नारायणपीठ" भी कहते हैं।

इस स्थान का माहात्म्य “श्रीनवद्वीप - धाम - माहात्म्य" ग्रन्थ पन्द्रहवें अध्याय में इस प्रकार वर्णित है —

'श्रीवैकुण्ठपुरे आसि' प्रभु नित्यानन्द
श्रीजीवे कहेन तवे हासि' मन्द - मन्द
॥

नवद्वीप अष्टदल एक पार्श्वे हय
एइ त' वैकुण्ठपुरी, शुनह निश्चय ॥

परव्योम श्रीवैकुण्ठ, नारायण स्थान।
विरजार पारे स्थिति एइ त' सन्धान ॥

मायार नाहिक तथा गति कदाचन।
श्री - भू - लीला - शक्ति सेव्य तथा
नारायण ।

चिन्मयभूमिर ब्रह्म हय त' किरण ।
चर्मचक्षे जड़दृष्टि करे सर्वजन ॥

एइ नारायण- धामे नित्य निरंजने ।
नारद देखिल कभु चिन्मय लोचने ।।

नारायण देखे पुन: गौरांगसुन्दर ।
देखि' हेथा कतदिन रहे मुनिवर ।।"

श्रीनित्यानन्द प्रभु श्रीवैकुण्ठपुर में आकर श्रीजीव गोस्वामी जी को मन्द मन्द हंसते हुए कहने लगे कि इस नवद्वीप नामक दिव्य अष्टदल कमल के एक किनारे पर यह वैकुण्ठपुरी है। श्रीवैकुण्ठ धाम, श्रीनारायण का स्थान है। विरजा के पार में इसकी स्थिति है, यही अनुभूति भक्तों की होनी चाहिये । यहाँ माया का प्रभाव नहीं है। श्री- भू - आदि लीलाशक्तियों द्वारा सेवित

श्रीनारायण भगवान यहाँ विराजमान हैं। यह चिन्मयभूमि है। ब्रह्म इसकी किरण है। दुनियाँ के लोग अपनी दुनियावी आंखों से इस स्थान की दिव्यता का अनुभव न करके इसे भी दुनियाँ का हिस्सा ही देखते हैं। इस नारायणधाम में भक्त प्रवर नारद जी ने चिन्मय नेत्रों से भगवान् के दर्शन किये तथा - भगवान श्रीनारायण को पुनः श्रीगौरसुन्दर रूप में देखा था। यही नहीं, आनंद में विहल होकर मुनिवर नारद ने कुछ दिन यहाँ पर वास भी किया था।

(ङ) महत्पुर — इस स्थान का वर्तमान नाम 'मातापुर' है। महत्श्रेष्ठ

धर्मराज युधिष्ठिर जी ने इस स्थान पर वास किया था, इसलिये इस स्थान का नाम 'महत्पुर' हुआ।

इस स्थान के सम्बन्ध में 'भक्तिरत्नाकर' ग्रन्थ की बारहवीं है: तरंग में, वर्णित हुआ है —

"एत कहि' श्रीवैकुण्ठपुरे प्रणमिया।
मातापुरे चले चतुर्दिक निरखिया ।।

श्रीनिवासे कहेन श्रीईशान ठाकुर।
एइ आगे देख ग्राम नाम मातापुर ।।

पूर्वे श्रीमहत्पुर ग्राम नाम हय ।
महत्पुर प्रसंग कहि', ये लोके कय ।।

* * * * * *

एकचक्रा हइते पाण्डव पन्चभाइ ।
नवद्वीपे आसि' उत्तरिला एइ ठाँइ ॥

* * * * *

महतेर श्रेष्ठ युधिष्ठिर महाशय ।
ताँर वासस्थान हेतु महत्पुर कय ॥"

श्रीईशान, इतना कहकर श्रीवैकुण्ठपुर को प्रणाम करके, चारों ओर निरखते हुए, मातापुर की तरफ चले । श्रीईशान ठाकुर, श्रीनिवासजी को कहते हैं कि यह आगे का ग्राम मातापुर है। पहले इस ग्राम का नाम

महत्पुर था। महत्पुर का प्रसंग जैसा मुझे लोगों से मालूम हुआ, कहता हूँ

* * * * *

एकचक्रा से पाँचों पाण्डव नवद्वीप में आकर यहाँ ठहरे थे।

* * * * *

महत्- पुरुषों में अर्थात् महापुरुषों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर का यह वासस्थान है, इसीलिए इसे महत्पुर कहते हैं।

इस स्थान के संबंध में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी ने "श्रीनवद्वीप - धाम माहात्म्य" ग्रन्थ के पन्द्रहवें अध्याय में लिखा है —

"एइरूप पूर्वकथा बलिते बलिते।
सबे उपनीत महदपुर सन्निहिते ॥

प्रभु बले एइस्थाने आछे काम्यवन।
परम भकतिसह कर दरशन ॥

पंचवट एइस्थाने छिल पूर्वकाले।
प्रभुर इच्छाय एबे गेल अन्तराले ॥

एबे एइ स्थान मातापुर नामे कय।
पूर्व नाम शास्त्रसिद्ध महत्पुर हय ॥

द्रौपदीर सह पाण्डुपुत्र पंचजन।
अज्ञातवासेते गौड़े कैल आगमन ।।

एकचक्रा ग्रामे स्वप्ने राजा युधिष्ठिर ।
नदीया - महात्म्य जानि' हइला
अस्थिर ।।

पर दिन नवद्वीप दर्शनेर आशे ।
एइ स्थाने आइल सबे परम उल्लासे
।।

नवद्वीप शोभा हेरि' पाण्डुपुत्रगण ।
गौड़वासिगणे भाग्य करे प्रशंसन ।।

कतदिन करिलेन एइस्थाने पास।
असुर राक्षसगणे करिल विनाश ।।

युधिष्ठिर - टिला एइ देव सर्वजन।
द्रौपदीर कुण्ड हेथा कर दरशन॥

स्थानेर माहात्म्य जानि' राजा
युधिष्ठिर।`
एइ स्थाने कतदिन हइलेन स्थिर" ॥

इस प्रकार पहले की तरह ही हरिकथा कहते कहते श्रीईशान ठाकुर व श्रीनिवास आचार्य महतपुर के निकट पहुँच गये। श्री ईशान यह स्थान काम्यवन है, परम भक्ति के साथ इसका ठाकुर कहते हैं दर्शन करो। पहले यहाँ पाँच वटवृक्ष थे, लेकिन भगवान की ही इच्छा से अब ये लुप्त हो गये। आजकल इस स्थान को

मातापुर कहते हैं। पहले शास्त्रानुसार इसका नाम महत्पुर था । द्रौपदी के साथ पाँचों पाण्डुपुत्र अज्ञातवास के लिये यहीं गौड़ देश में आये थे। एकचक्रा ग्राम में राजा युधिष्ठिर स्वप्न में नदीया - माहात्म्य जानकर अस्थिर हो गये। अगले दिन नवद्वीप दर्शन की आशा से, वे परम उल्लास के साथ, इस स्थान पर आये थे। पाण्डुपुत्र नवद्वीप की शोभा देखकर, गौड़वासियों के भाग्य की प्रशंसा करने लगे। पाण्डवों ने कुछ दिन इस स्थान पर वास ने किया एवं यहाँ के कुछ असुरों व राक्षसों का विनाश किया था। यह युधिष्ठिर - टीला है तथा यहाँ, द्रौपदी - कुण्ड भी है, इसे दर्शन करो।

इस स्थान का माहात्म्य जानकर राजा युधिष्ठिर ने भी कुछ दिन यहाँ वास किया था।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव